

पाठ 30 अध्याय 31 और 32

इस सप्ताह हम निर्गमन 31 का अध्ययन जारी रखते हैं, जिसका आरंभिक भाग पद 12 से होता है, जो इब्रानी भाषा में सब्त, सब्त के विषय में है।

आइये अपनी यादों को ताज़ा करने के लिए इस छोटे से भाग को फिर से पढ़ें।

निर्गमन 31:12 को अंत तक पुनः पढ़ें

सब्त पवित्र समय का पालन करने के बारे में परमेश्वर का नियम है, ठीक वैसे ही जैसे तम्बू पवित्र स्थान का पालन करने के बारे में परमेश्वर का नियम है। अब, यह आध्यात्मिक के बजाय थोड़ा दार्शनिक लग सकता है लेकिन यह वास्तव में ऐसा नहीं है। मैं समझाता हूँ, इसलिए मेरे साथ बने रहें क्योंकि यह जटिल लग सकता है लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं है।

एक वैज्ञानिक सही कहेगा कि हम एक ऐसे ब्रह्मांड में रहते हैं जिसमें केवल स्थान और समय है। अंतरिक्ष में 3 आयाम होते हैं। समय एक और आयाम है जो हमें कुल 4 आयाम देता है। पहले 3 आयाम (स्थान) को समझना बहुत आसान है क्योंकि हम बस उस कमरे को देख सकते हैं जिसमें हम मिलते हैं (यह स्थान जिसे हमने अपने लिए इकट्ठा होने के लिए हासिल किया है) और इसकी लंबाई, चौड़ाई और ऊँचाई देख सकते हैं। जो समझना इतना आसान नहीं है वह है समय। हम चूने को नहीं देख सकते, या समय को छू नहीं सकते, लेकिन हम इसके प्रभावों को देख सकते हैं। यह मेरे लिए हर सुबह अपने आईने में विशेष रूप से देखने योग्य है, क्योंकि मैं अपने सिर के मुकुट के चारों ओर भूरे बालों के घेरे के साथ इस झुर्रीदार चेहरे को देखता हूँ और पूछता हूँ, “यह कौन है?” यह छवि निश्चित रूप से वैसी नहीं दिखती जैसी मेरा मन उम्मीद करता है। मुझे ऐसा नहीं लगता कि यह प्रतिबिंब दिखता है। उम्र बढ़ना समय का प्रभाव है।

लेकिन, समय क्या है? जिस तरह एक इंच या एक मीटर पहले 3 आयामों (लंबाई, चौड़ाई और ऊँचाई) का माप है, उसी तरह समय वास्तव में क्षय का माप है जैसा कि थर्मोडायनामिक्स के दूसरे नियम में व्यक्त किया गया है। सभी भौतिक चीजें क्षय होती हैं, लेकिन वे अलग-अलग दरों पर क्षय होती हैं। समय क्षय की दर को मापता है। एक चट्टान एक इंसान की तुलना में बहुत धीमी गति से क्षय होती है, लेकिन सभी चट्टानें एक ही दर से क्षय नहीं होती हैं और न ही सभी इंसान बिल्कुल एक ही दर से क्षय होते हैं। वास्तव में हमारे सबसे सटीक समय मापने वाले उपकरण, परमाणु घड़ियाँ, वास्तव में उन्हें काम करने के लिए कुछ परमाणु कणों के क्षय की लगभग पूरी तरह से स्थिर दर का उपयोग करती हैं।

नहीं, यह कोई विज्ञान का पाठ नहीं है, यह हमें सब के पीछे परमेश्वर के स्पष्ट तर्क के कम से कम एक हिस्से को समझने में मदद करने के लिए एक पाठ है। चूँकि हमारे परमेश्वर ने अंतरिक्ष और समय से मिलकर 4 आयामों का एक ब्रह्मांड बनाया है, इसलिए उसने अपनी रचना के सभी 4 आयामों की पवित्रता को सुनिश्चित करने का एक साधन निर्धारित किया है, तम्बू अंतरिक्ष के 3 आयामों का प्रतिनिधि है, और सब समय के आयाम का प्रतिनिधि है। परमेश्वर तम्बू को पवित्र करता है। इसे अन्य सभी मानवीय स्थानों से अलग करके और इसमें निवास करके, और वह सब को पवित्र बनाता है।

अन्य सभी समय खंडों से इसे अलग करते हुए तथा समय के इस विशिष्ट खंड, सब को पवित्र घोषित करते हुए, स्थान के किसी अन्य खंड (मूसा के समय में तथा उसके बाद कई सौ वर्षों तक) को स्थान की पवित्रता को मूर्त रूप देने के लिए पवित्र के रूप में अलग नहीं रखा गया था, तथा समय के किसी अन्य खंड को समय की पवित्रता को मूर्त रूप देने के उद्देश्य से पवित्र के रूप में कभी भी अलग नहीं रखा गया है। निश्चित रूप से समय के अन्य खंडों (अन्य दिनों) को नियुक्त किया गया है तथा उन अन्य चीजों को सम्मान देने के लिए अलग रखा गया है जिन्हें परमेश्वर सम्मानित करना चाहता है (उदाहरण के लिए बाइबिल के पर्व); लेकिन उनमें से किसी का भी परमेश्वर द्वारा समय के सृजन को सम्मान देने का विशिष्ट उद्देश्य नहीं था।

इसलिए सब का दिन परमेश्वर द्वारा निर्धारित किया गया है, ताकि वह अपने चौथे आयाम, समय की रचना को मूर्त महिमा दे सके। तम्बू और सब मिलकर परमेश्वर की रचना की पवित्रता को स्थापित करते हैं। इसे ध्यान में रखते हुए, आइए देखें कि हम सब के बारे में अध्याय 31 के इन अंतिम कुछ पदों से क्या सीख सकते हैं।

13वें पद के अंतिम शब्द उन दिलचस्प, लेकिन आमतौर पर अनदेखा किए जाने वाले छोटे वाक्यांशों में से एक हैं, जिनका एक बड़ा अर्थ है और इसका महत्व 14वें पद में समझाया गया है। 13वें पद के अंत में यह कहा गया है, "ताकि तुम जान सको कि मैं ही वह प्रभु हूँ जो तुम्हें पवित्र बनाता है। आपका बाइबिल संस्करण कह सकता है, "तुम्हें पवित्र बनाता है", या "पवित्र किया गया" या कुछ ऐसा, "पवित्र" के स्थान पर यह सब एक ही बात है। "पवित्र" या "पवित्र करना" शब्द का अनुवाद इब्रानी मूल शब्द **"कादाश"** से किया गया है जिसका वास्तव में अर्थ है "पवित्र" या "पवित्र होना ताकि अलग रखा जा सके (जो कि अंग्रेजी शब्द पवित्र का अर्थ है)। लेकिन ध्यान दें कि परमेश्वर यहाँ क्या कहना चाह रहा है: वह कहता है कि इस्राएल के लिए सब का पालन करने

का उद्देश्य क्या है? उन्हें, तुम्हें, **पवित्र** बनाना! यह कोई छोटी बात नहीं है और इसके बहुत बड़े निहितार्थ हैं।

पद 14 में, एक और दिलचस्प वाक्यांश है जो पद 13 में देखे गए वाक्यांश के साथ मिलकर काम करता है, और यह सबसे अधिक सार्थक है यदि हम इसके सबसे शाब्दिक अर्थ को स्वीकार करते हैं जो आमतौर पर बाइबिल का अध्ययन करने का सबसे अच्छा तरीका है। यह इस तरह से शुरू होता है। “सब्त का पालन करो क्योंकि यह तुम्हारे लिए पवित्र है। मैं जिस शब्द को देखना चाहता हूँ वह इस पद में “पवित्र” के रूप में अनुवादित किया गया है (मैं पद 14 में हूँ, 13 में नहीं)। इब्रानी में, यहाँ इस्तेमाल किया गया शब्द “**कोदेश**” है, हालाँकि यह मूल शब्द **कदाश** से लिया गया है, इसका थोड़ा अलग अर्थ है। **कोदेश** का मतलब पवित्र नहीं है, यह खराब विद्वता है। इब्रानी में “**कादाश**” का मतलब पवित्र होता है इसलिए यदि **कोदेश**, जो कि पद 14 में इस्तेमाल किया गया शब्द है, का अर्थ “पवित्र” नहीं है, तो इसका क्या अर्थ है? इसका अर्थ है “पवित्रता”। इस पद का शाब्दिक अर्थ है “सब्त का पालन करो क्योंकि यह तुम्हारे लिए पवित्रता है”।

तो फिर क्या अंतर है? क्या मैं बाल बाँट रहा हूँ? नहीं, वास्तव में जिस तरह से इसका सामान्य अनुवाद किया जाता है, वह हमारे दिमाग में इस प्रकार है “मैं चाहता हूँ कि तुम सब्त का पालन करो, क्योंकि मैंने इसे पवित्र बनाया है और इसलिए तुम्हें इसे पवित्र मानना चाहिए और इसका पालन करना चाहिए क्योंकि यह एक पवित्र दिन है” ठीक है? आह। लेकिन, इसका अर्थ यह **नहीं** है।

इसका अर्थ यह है कि “मैं चाहता हूँ कि तुम सब्त का पालन करो, क्योंकि मैंने न केवल इसे पवित्र घोषित किया है, बल्कि जब तुम मेरी आज्ञा का पालन करते हो और सब्त का पालन करते हो, तो यह तुम्हें मेरी दृष्टि में पवित्रता की स्थिति में रखता है।” क्या तुम अंतर देखते हो? पहला तरीका यह है कि मैं चाहता हूँ कि तुम ऐसा करो क्योंकि मैंने सब्त को पवित्र बनाया है, और मैं चाहता हूँ कि तुम सब्त की पवित्रता का सम्मान करो। दूसरा तरीका यह है कि सब्त का पालन करके तुम सब्त की पवित्रता को ग्रहण करते हो। यह सब्त की पवित्रता है जो तुम पर आरोपित होने पर, तुम तक पहुँचाई जाने पर तुम्हें पवित्र बनाती है। इसलिए, पद 13 कहता है। मैं तुम्हें पवित्र बनाने जा रहा हूँ और पद 14 कहता है, मैं पवित्रता को प्रसारित करके ऐसा करने जा रहा हूँ मेरे सब्त में तुम्हारे लिए निहित है। यदि तुम मेरी आज्ञा का पालन करोगे और मेरे सब्त का पालन करोगे।

यह अवधारणा हमें बिल्कुल भी अजीब नहीं लगनी चाहिए, क्योंकि हमें बताया गया है कि स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने के लिए, हमें परमेश्वर के मानक के अनुसार धार्मिक होना चाहिए। लेकिन, किसी व्यक्ति के लिए अपने दम पर उस धार्मिकता की स्थिति को प्राप्त करना पूरी तरह से असंभव है। इसलिए, यीशु में विश्वास करके, हम उसकी धार्मिकता में आच्छादित हैं। यीशु की धार्मिकता हम पर आरोपित की जाती है। यीशु की धार्मिकता हमें प्रेषित की जाती है। परमेश्वर यहाँ निर्गमन में यह सिद्धांत बता रहे हैं कि, उनके अनुग्रह के माध्यम से। वह इस्राएल पर आरोपित करेंगे। वह इस्राएल को पवित्रता की एक ऐसी स्थिति प्रदान करेंगे, जिसे किसी अन्य तरीके से प्राप्त नहीं किया जा सकता है।

इससे हमें यह समझने में भी मदद मिलती है कि मसीह का वास्तव में क्या मतलब था जब उन्होंने कहा: “सब्त मनुष्य के लिए बनाया गया था, न कि मनुष्य सब्त के लिए।” वह कह रहा था कि सब्त को पवित्रता लाने के लिए मनुष्य की रचना करना आवश्यक नहीं था, लेकिन यह आवश्यक था कि सब्त को बनाया जाए ताकि पवित्रता मनुष्य तक पहुँचाई जा सके।

सब्त अध्यादेश की गंभीरता तब रेखांकित होती है जब पद 14 यह कहकर आगे बढ़ता है कि जो कोई सब्त को अपवित्र करता है उसे काट दिया जाना चाहिए, उसे परमेश्वर से अलग कर दिया जाना चाहिए। काट दिए जाने का मतलब यह हो सकता है कि उन्हें सामान्य जीवनकाल से कम मरना पड़ेगा, या इसका मतलब यह हो सकता है, जैसा कि इस उदाहरण में है, उन्हें सब्त का पालन न करने के लिए मार दिया जाना है और, बाद में तोरह में, हमें एक या दो उदाहरण मिलेंगे जिसमें किसी ऐसे व्यक्ति को मौत की सजा दी गई जिसने सब्त का उचित रूप से पालन नहीं किया।

यह सब्त का विधान कितने समय तक चलेगा? पद 16 कहता है कि यह सदाकाल तक रहेगा।

परमेश्वर कहते हैं कि सब्त उनके और इस्राएल के बीच एक संकेत है। इब्रानी में संकेत के लिए शब्द ओथ (ओथ) है। शब्द का अर्थ एक पुष्टि या प्रमाण, भेद का चिह्न है। सब्त एक भेद का चिह्न है जो परमेश्वर और इस्राएल के बीच के रिश्ते को बाकी सभी से अलग करता है और, आगे पद 16 में, वह ब्रह्मांड के निर्माण (जैसा कि हमने अपने पाठ की शुरुआत में बात की थी) और सब्त के पालन के बीच इस संबंध को बनाता है।

अब मैं आपके लिए कुछ उदाहरण देकर समझा सकता हूँ। मैंने कहा कि सब्त समय का एक बहुत ही विशिष्ट खंड (7वाँ दिन) है जिसे समय की पवित्रता को मूर्त रूप देने के लिए अन्य

सभी खंडों से अलग रखा गया है क्योंकि यह परमेश्वर की रचना का चौथा आयाम है। मेरा जन्म 26 नवंबर को हुआ था। इसलिए मेरा जन्मदिन प्रत्येक वर्ष 26 नवंबर को होता है। क्या होगा यदि मैंने निर्णय लिया कि मैं अपना जन्मदिन 15 मार्च को याद रखना पसंद करता हूँ? कैसा रहेगा यदि 15 मार्च आने पर मैं अपने घर में यह घोषित कर दूँ कि मेरा जन्मदिन 26 नवंबर है? हालाँकि निश्चित रूप से इसके विरुद्ध कोई कानून नहीं है, लेकिन उतनी ही निश्चितता के साथ इसका कोई मतलब नहीं है और यह जन्मदिन मनाने के पूरे उद्देश्य को ही नष्ट कर देता है 15 मार्च 26 नवंबर नहीं है। प्रत्येक बहुत विशिष्ट और भिन्न दिन हैं।

दोस्तों, बाइबिल नहीं बल्कि पवित्र शास्त्र सब्त को प्रत्येक सप्ताह के 7वें दिन के रूप में परिभाषित करता है। प्रभु ने अपनी सृष्टि के चौथे आयाम के प्रतिनिधि के रूप में जो अलग, पवित्र, समय खंड स्थापित किया है, वह 7-दिन के सप्ताह का 7वाँ दिन है। यह हमारे द्वारा चुना गया कोई भी समय खंड नहीं है। हम सब्त की अपनी परिभाषा नहीं चुन सकते, जैसे हम अपनी परिभाषा नहीं चुन सकते।

परमेश्वर ने मूसा और इस्राएल के लोगों को अपने नियम और सिद्धांत देने का काम अभी पूरा कर लिया है, और इसलिए यहोवा ने दो मंजिली पट्टियों पर, अपने हाथों से अलौकिक रूप से उन दस सिद्धांतों को अंकित किया, जिनसे सभी व्यवस्था, अध्यादेश, नियत समय और त्यौहार, रीति-रिवाज और अनुष्ठान, यहाँ तक कि बलि प्रथा भी इसी पर आधारित होगी।

हमने अब निर्गमन के 6 में से 4 भाग पूरे कर लिए हैं, और 5वें भाग को शुरू करने के लिए तैयार हैं, जिसे एवरेट फॉक्स “बेवफाई और सुलह” कहते हैं।

अध्याय 32 पूरा पढ़ें

अध्याय 32 पूरी तरह से कुख्यात स्वर्ण बछड़े की घटना के बारे में है। स्वर्ण बछड़े के बारे में शास्त्रों को समझने की कुंजी यह है कि इस्राएल उसी समय मूसा की वाचा को तोड़ रहा था जब मूसा पहाड़ की चोटी पर उसे प्राप्त कर रहा था। याद रखें, यह एक सशर्त वाचा है जिसका पालन करना इस्राएल के लिए दायित्व है, क्योंकि वाचा में इस बारे में शर्तें हैं कि अगर वे ऐसा नहीं करते हैं तो क्या होगा। परमेश्वर देखता है कि इस्राएल ने उस बछड़े को बनाकर जो किया, वह व्यभिचार है, और इसलिए, बेवफाई है। व्यभिचार क्यों? क्योंकि उन्हें उसके साथ एकता में रहना चाहिए था, और फिर उन्होंने एक और “परमेश्वर” को तस्वीर में ला दिया।

यह ऐसे अध्याय हैं जो बाइबिल को मानव जाति के इतिहास में साहित्य के सबसे उल्लेखनीय टुकड़े के रूप में चिह्नित करते हैं (स्पष्ट रूप से यह केवल साहित्य से कहीं अधिक है) परमेश्वर ने दुनिया के सभी लोगों से एक लोगों को अलग किया है ताकि वे याजकों का एक राज्य और उनके लिए एक पवित्र राष्ट्र बन सकें और अब, इस्राएल को किसी तरह से अन्य मनुष्यों की तुलना में बेहतर दिखाने की कोशिश करने के बजाय, गलत और बुरे काम करने के लिए कम संवेदनशील, पाप और अनैतिकता के प्रलोभनों से ऊपर, ऐसे लोगों का एक समूह जो बस एक खुशनुमा धुन बजाते हैं और पूरे दिन परमेश्वर की स्तुति करते हुए उनके काम में लगे रहते हैं, हमें मानवीय स्थिति की वास्तविकता दिखाई गई है। हमारी चंचलता, हमारा स्वार्थी और विद्रोही स्वभाव यहाँ इस अध्याय में स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होता है, जो परमेश्वर के चरित्र और हमसे उनकी अपेक्षाओं के बिल्कुल विपरीत है।

पिछले कई हफ़्तों से निर्गमन के अध्ययन में ऐसा लग रहा है जैसे हम मूसा के साथ परमेश्वर की बातचीत को चुपके से सुन रहे हैं। माउंट सिनाई के शिखर से, जो कुछ भी अच्छा, सच्चा और परिपूर्ण है, स्वर्गीय आध्यात्मिक आदर्श मूसा को बताया और समझाया गया है। खैर, खेत पर वापस आकर, रोज़मर्रा की भौतिक ज़िंदगी की वास्तविकता जो परमेश्वर के मानकों के साथ टकराव करती है, उसका सामना हमें सीधे तौर पर होता है।

हमें यहाँ विडंबना को नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिए: जिस समय मूसा यहोवा से अविश्वसनीय प्रकाशितवाक्य प्राप्त कर रहा था, शिखर पर खड़ा था, परम पवित्र स्थान पर, उसी समय परमेश्वर मानवता को एक प्रेम पत्र भेजने के लिए खुद को नीचे कर रहा था जो इब्रानियों को उसके साथ मेल-मिलाप करने के लिए बुला रहा था, इस्राएल के लोग वही काम करने की योजना बना रहे थे जिन्हें परमेश्वर ने निषिद्ध किया था, अनुवाद हॉ, हम जानते हैं कि एक परमेश्वर है, हम जानते हैं कि वह प्रेमपूर्ण और शक्तिशाली है, हम जानते हैं कि उसके पास अच्छे और बुरे, सही और गलत के मानक हैं, लेकिन हम चिंतित और तनावग्रस्त हैं इसलिए हम मामलों को अपने हाथों में लेंगे, बहुत-बहुत धन्यवाद। ओह, कितना मानवीय है।

अध्याय 32 के पहले कुछ पद लोगों द्वारा दूसरी आज्ञा तोड़ने के औचित्य को समझाने के बारे में हैं। जो कहती है “मेरे सिवा तुम्हारा कोई दूसरा परमेश्वर न हो। तुम परमेश्वर की नक्काशीदार छवि न बनाने के लिए” और मूल रूप से वह तर्क यह है कि वे अधीर हैं और थोड़ा डर लगता है। उन्हें जवाब चाहिए और वे तुरंत जवाब चाहते हैं! बेशक, मुझे लगता है कि पिछले हफ़्ते इसने कई लोगों को झकझोर कर रख दिया था हमें स्पष्ट रूप से बता दिया कि व्यभिचार भी इस्राएलियों

के महान अपराध का मूल था और यहोवा के साथ एकता को बछड़े की पूजा के साथ मिलाकर, एक और परमेश्वर को तस्वीर में लाकर, यह एकता भ्रष्ट और अपवित्र हो गई वास्तव में, यह एकता टूट गई।

और इस्राएलियों ने परमेश्वर के विरुद्ध इस सबसे बुरे अपराध में उनका नेतृत्व करने के लिए किसे चुना, लेकिन वह व्यक्ति जो उनका महायाजक बनने वाला है! मूसा दूसरा कमांडर, जिसने मूसा की लाठी उठाई और फिरौन के सामने परमेश्वर के चमत्कारों को बोला, मूसा का अपना भाई हारून। कोई भी हँसी में लोटपोट हो सकता था, अगर यह सब इतना दुखद और विशिष्ट न होता।

हमें बताया गया है कि हारून ने इस्राएल के लिए एक परमेश्वर की प्रतिमा बनाने पर सहमति जताई थी, और उसने लोगों को निर्देश दिया था कि वे अपनी बालियों से सोना उसे दें। मुझे यकीन नहीं है कि इसका क्या महत्व है, कि यह केवल बालियाँ थीं जिनसे सोना इकट्ठा किया गया था, लेकिन एक बात तो तय है कि इस स्वर्ण बछड़े को बनाने के लिए बहुत बड़ी गिनती में बालियाँ आवश्यक होंगी, इसलिए बहुत सारे लोग इस बात से सहमत थे कि वे क्या करने वाले थे।

बछड़े के बन जाने के बाद इब्रानियों ने क्या सोचा कि उन्होंने क्या किया है? उन्हें क्या लगा कि उन्होंने क्या बनाया है और यह किसका प्रतिनिधित्व करता है? इसका उत्तर पद 4 के अंतिम कुछ शब्दों में है, और फिर पद 5 में। “यही तुम्हारा परमेश्वर है, हे इस्राएल, जो तुम्हें मिश्र की भूमि से लाया है” और हारून ने घोषणा की कि कल वे एक वेदी बनाएंगे और सोने के बछड़े के लिए एक जानवर की बलि देंगे और “यहोवा के लिए उत्सव” मनाएँगे। आपकी बाइबिल में संभवतः प्रभु के लिए एक उत्सव कहा गया है। यह एक गलत अनुवाद है। इसने कई टिप्पणीकारों को यह सुझाव देने के लिए प्रेरित किया है कि इस्राएलियों के दिमाग में एक पूरी तरह से अलग “प्रभु” था, उनके पुराने मिश्र के देवताओं में से एक। लेकिन, मूल इब्रानी में “प्रभु” नहीं कहा गया है, एदोनाई, यह कहता है YHWH येहोवेह, परमेश्वर का व्यक्तिगत नाम कहता है। लोगों ने सोचा कि वे इस्राएल के परमेश्वर, यहोवा की एक उपयुक्त छवि बना रहे थे, जब उन्होंने उस बछड़े को बनाया!! शायद हम सभी को उन छवियों और चिह्नों की बेहतर जाँच करनी चाहिए जिनका हम उपयोग करते हैं क्योंकि उनमें से बहुत सारे हैं, और मैं बिल्कुल भी सहज नहीं हूँ कि उनका उपयोग करने के लिए हमारा तर्क परमेश्वर की नज़र में सही है

यहाँ सतह के नीचे इतने सारे सबक हैं कि हम उन पर बहुत समय बिता सकते हैं। तो, मैं आपको बस कुछ सबक बताता हूँ। सबसे पहले, सुनहरा बछड़ा स्वयं एक सामान्य पशु छवि थी जिसका उपयोग लगभग हर मध्य पूर्वी संस्कृति द्वारा किया जाता था संस्कृति। मिस्र में इसे एपिस बुल कहा जाता था, जो वास्तव में एक बहुत ही उच्च देवता था। यह शक्ति का प्रतिनिधित्व करता था और अधिकार, और इब्रानियों को इससे अधिक परिचित होना चाहिए था। अब हम नहीं कर सकते यह निश्चित रूप से पता है कि यह मिस्र के एपिस थे जिन्हें उन्होंने स्वर्ण बछड़े के मॉडल के रूप में इस्तेमाल किया था। यह कोई अन्य मध्य पूर्वी बैल देवता भी हो सकता था। लेकिन यह वास्तव में कोई मायने नहीं रखता। मुद्दा यह है कि उन अविश्वसनीय चमत्कारों के बावजूद जो उन्होंने व्यक्तिगत रूप से देखे थे, यहोवा की बात सुनने के बाद अपनी आवाज़ में उन्हें उसकी 10 आज्ञाएँ बताएँ, मुसीबत के पहले संकेत पर उनकी प्रवृत्ति नहीं थी परमेश्वर पर विश्वास करना, परमेश्वर पर भरोसा न करना, परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी न होना, बल्कि वैसा ही व्यवहार करना जैसा वे चाहते हैं हमेशा से था। मजेदार बात यह है कि मिस्र में अन्य देवताओं की पूजा करना कभी भी स्वतंत्र नहीं था मिस्र से उन्हें कोई अच्छी चीज़ लाकर दी गई थी या नहीं? जाहिर है, नहीं, क्योंकि वे बहुत समय तक गुलाम रहे थे। कम से कम 2 शताब्दियों पहले परमेश्वर ने उन्हें बचाया था। लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ा, वे बस वापस उसी स्थिति में चले गए जो पहले थी परिचित, और जो सही था उससे मुँह मोड़ लिया। लोग ज्यादा नहीं बदले हैं, है न? जब बात आती है तो हम पारंपरिक और आरामदायक चीज़ों पर ही निर्भर हो जाते हैं। उन चीज़ों से प्यार करें जिनसे हम परिचित हैं, वे चीज़ें जो हमारी चुनी हुई जीवनशैली को मान्य लगती हैं, परमेश्वर के विरुद्ध। व्यभिचार, क्योंकि मूसा की वाचा ने इस्राएल के बीच एक संघ बनाया था।

हम परमेश्वर के सिद्धांतों से समझौता कर लेंगे या उन्हें तर्कसंगत बना देंगे, अगर यह हमारी भावनाओं या हमारी इच्छाओं को संतुष्ट करता है। मैंने सुना है कि पागलपन की असली परिभाषा यह मानना है कि अगर आप एक ही काम करते रहेंगे तो आपको अंततः अलग परिणाम मिलेंगे। हममें से कोई भी ऐसा नहीं है जो इस पाठ को सुन रहा हो और जिसे हर दिन अपने पुराने तरीकों पर टिके रहने, वापस लौटने की इच्छा से लड़ना न पड़े, भले ही हम सच्चाई जानते हों।

दूसरा, लोगों को ऐसा क्यों लगा कि उन्हें परमेश्वर की छवि की आवश्यकता है? मेरा मतलब है कि यहाँ सबसे बड़ा आकर्षण क्या है? दिलचस्प बात यह है कि परमेश्वर की उपस्थिति के दृश्यमान, ठोस सबूत की मानवीय आवश्यकता ने उन्हें इस भयानक कार्य के लिए प्रेरित किया और यह उसी मानवीय आवश्यकता के लिए है कि हम अपनी आँखों से देखें कि परमेश्वर तम्बू के

माध्यम से क्या प्रदान कर रहा था। परमेश्वर जानता था, और जानता है, कि हमें अपने जीवन में उसके दिव्य कार्यों के दृश्यमान आश्वासन और सबूत की आवश्यकता है। इस्राएल को भी इसकी आवश्यकता थी। परमेश्वर को सांसारिक तम्बू की आवश्यकता नहीं थी और निश्चित रूप से उसे इसे बनाने के लिए मानवीय हाथों की आवश्यकता नहीं थी। तम्बू लगभग सभी अन्य चीजों की तरह, इस्राएल के लिए, हमारे लिए था, न कि उसके लिए। तम्बू कुछ स्वर्गीय सिद्धांतों का भौतिक प्रदर्शन था और साथ ही पवित्र स्थान के परमेश्वर के सिद्धांत का प्रतिष्ठापन भी था।

स्वर्ण बछड़े और तम्बू के बीच एक समानता, एक कड़ी है, क्योंकि दोनों का उद्देश्य मनुष्य की परमेश्वर की उपस्थिति के प्रत्यक्ष प्रमाण की आवश्यकता को पूरा करना था। स्वर्ण बछड़े को तम्बू के विपरीत मानना हमारे लिए अच्छा रहेगा। स्वर्ण बछड़ा मनुष्य की परमेश्वर के बारे में विकृत धारणा है। इसे इस्राएल की सबसे अच्छी और सबसे ईमानदार धार्मिक कल्पनाओं और प्रयासों से बनाया गया था। तम्बू एक स्वर्गीय मॉडल था, इसे परमेश्वर ने नियुक्त किया था, लेकिन, यह परमेश्वर के समय पर भी आएगा, उनके समय पर नहीं।

मनुष्य द्वारा नियुक्त, बनाम परमेश्वर द्वारा नियुक्त। यह वह लड़ाई है जिसमें मानवता व्यावहारिक रूप से उस क्षण से लगी हुई है जब से सृष्टि का अंत हुआ, और यह भविष्य में मसीह के सहस्राब्दी शासन के अंत तक जारी रहेगी। संभवतः हमारे जीवनकाल के कुछ समय में हम इस लड़ाई को सबसे नाटकीय तरीके से खेलते हुए देखेंगे, दुनिया के इतिहास के अंतिम चरण में, जब हम देखेंगे कि मानव जाति हमारे ऊपर शासन करने के लिए विश्व सरकार के प्रमुख के रूप में मसीह विरोधी को स्थापित करती है, और मनुष्य उसे क्यों स्थापित करेगा? उन्हीं कारणों से जो इस्राएलियों ने अपनी छवि को ढाला: अधीरता, भय और चिंता, और इस बात के स्पष्ट प्रमाण की आवश्यकता कि परमेश्वर मौजूद है। दुनिया पहले से ही किसी ऐसे व्यक्ति के लिए रो रही है जो उस नए स्वर्ण बछड़े का निर्माण करे। दुनिया को जकड़ने वाली हिंसा और आतंक को रोकने के लिए कुछ करने के लिए, लेकिन कोई समाधान नहीं दिखता है और, जल्द ही, बहुत जल्द, मेरा मानना है कि चर्च का धर्मत्यागी हिस्सा दुनिया के प्रयास में शामिल हो जाएगा, यदि नेतृत्व नहीं करेगा, तो अंतिम समय के स्वर्ण बछड़े, मसीह विरोधी को पहचानने और स्थापित करने के लिए, और मूसा के दिनों की तरह ही यह भी होगा क्योंकि परमेश्वर मसीहा यीशु के रूप में परमेश्वर की सच्ची उपस्थिति के दृश्यमान प्रदर्शन के लिए दुनिया को तैयार करने की प्रक्रिया में है। लेकिन यह उसके समय पर होगा; दुख की बात है कि हम बाइबिल (मुख्य रूप से प्रकाशितवाक्य) से पहले से ही जानते हैं कि दुनिया का अधिकांश हिस्सा, और चर्च के बचे हुए हिस्से को छोड़कर,

परमेश्वर के समाधान की प्रतीक्षा नहीं करेगा। हम विनाशकारी परिणामों के साथ मामलों को अपने हाथों में ले लेंगे। यही वह है जो इस्राएल ने किया था जब उन्होंने सोने का बछड़ा बनाया था।

पद 7 से शुरू करते हुए परमेश्वर मूसा को बताता है कि “तेरे” लोग क्या कर रहे हैं। मुझे लगता है कि यह थोड़ा अजीब है कि परमेश्वर इस्राएल को “तेरे” लोग कहता है। एक तरह से, एक पल के लिए, ऐसा लगता है कि परमेश्वर ने उन्हें अस्वीकार कर दिया क्योंकि वह उन्हें मेरे लोग कह रहा था और अंदाज़ा लगाइए: कानूनी तौर पर उसने ठीक यही किया, उसने इस्राएल को स्वीकार कर दिया। वाचा टूट गई थी और मूसा ने यह प्रदर्शित किया जब वह घाटी के तल पर वापस आया, इसके अलावा, यह आवश्यक होगा कि फिर से वाचा की स्थापना, जिसे हम मूसा को भी करते हुए पाएँगे जब वह दो और खाली पत्थर की गोलियाँ बनाता है। माउंट सिनाई के शिखर तक अपने साथ ले जाने के लिए जैसा कि प्रभु मूसा को निर्देश दे रहे हैं, वह मूसा से कहते हैं कि वह जल्दी से उस पहाड़ से नीचे उतर जाए और बछड़े की पूजा बंद कर दे और, वैसे, मूसा, जब तक तुम चले जाओगे, मैं यहाँ बैठूँगा और उन सभी तरीकों के बारे में सोचूँगा जिनसे मैं उन हठी लोगों को नष्ट कर सकता हूँ वास्तव में, मुझे लगता है कि मैं तुम्हारे साथ एक नए पिता के रूप में फिर से सब कुछ शुरू करूँगा, मेरे लिए एक विशेष लोगों का।

मूसा ने एक बहुत ही नेक कार्य करते हुए उन इस्राएलियों के लिए दया की याचना की और परमेश्वर ने दया कर दी।

अब, कुछ बातों पर विचार करना है। क्या परमेश्वर यहाँ उन्हें नष्ट करने और न करने के बीच अनिर्णय की स्थिति में आगे-पीछे हो रहा था? नहीं, बिल्कुल नहीं। यही, हमेशा की तरह, “शिक्षण मोड” तोरह मोड में है वह मूसा को दिखा रहा है कि सर्वशक्तिमान के प्रति अवज्ञा कितनी गंभीर हो सकती है वह मूसा को दिखा रहा है कि वास्तव में वे लोग उसकी जिम्मेदारी हैं वह प्रदर्शित कर रहा है कि यह इस्राएल ही नहीं है जो उसका चुना हुआ लोग है, यह कोई भी हो सकता है जिसे वह चुनता है। मध्यस्थ की स्थिति में मूसा वह है जो अपने कंधों पर उन लोगों के पापों को उठाता है जिन्हें अब आपके लोगों के रूप में वर्णित किया गया है क्योंकि वह वाचा जो इस्राएल को परमेश्वर के लोग बनाती है, अभी अमान्य हो गई है।

सीनफील्ड के एक एपिसोड की तरह, यहाँ इस्राएल के लोग हैं, जो पहाड़ की तलहटी में पागलों की तरह जश्न मना रहे हैं, इस सुनहरे बछड़े की पूजा और बलिदान कर रहे हैं, अपनी समस्याओं को स्वयं हल करने के लिए अपने छोटे से व्यक्तित्व पर बहुत गर्व कर रहे हैं, जबकि उसी समय परमेश्वर मूसा से कह रहे हैं कि जब तक वह वापस वहाँ पहुँचेगा तब तक ये लोग

संभवतः मानव टोस्ट के छोटे ढेर बन जाएँगे और इन मूर्ख विद्रोही इब्रानियों को बिल्कुल भी पता नहीं है कि उनके भाग्य का फैसला उस शिखर पर किया जा रहा है, जबकि वे नीचे अपनी आनंदमय अज्ञानता में आगे बढ़ रहे हैं।

मुझे यह भी लगता है कि मूसा को यहोवा की नज़र में और लोगों की नज़र में अभी भी अपनी अहमियत समझनी बाकी थी। मूसा हमेशा से ही इस काम को करने से कतराता रहा था। वह एक विनम्र व्यक्ति था, एक अंतर्मुखी, और उसे यह समझने में कठिनाई होती थी कि लोग उसे अपना नेता क्यों मानते हैं। जैसा कि हमने देखा कि जब परमेश्वर ने 10 आज्ञाएँ सीधे इस्राएल के लोगों को एक भयानक और भयानक ध्वनि के माध्यम से बताईं, तो उनकी प्रतिक्रिया आम तौर पर वाह थी! यह वाकई बहुत बढ़िया था, अब कृपया इसे फिर कभी मत करना! मूसा, तुम हमारे लिए परमेश्वर से बात करो, और उसे अपने साथ बात करने दो। उन्हें यकीन था कि अगर वे फिर कभी परमेश्वर की उपस्थिति में होंगे, या उसकी आवाज़ सुनेंगे, तो वे मर जाएँगे। उन्होंने मूसा को अपने और यहोवा के बीच एकमात्र माध्यम के रूप में देखा, जो निश्चित रूप से उसकी वास्तविक परिभाषा है।

इस्राएल के लोग मध्यस्थ के रूप में मूसा पर निर्भर थे और काफी समय के बाद, जब वह उस पहाड़ से नीचे वापस नहीं आया था, तो उन्होंने वही किया जो लोग नेतृत्व करते समय करते हैं, वे घबरा गए जब उन्होंने वह नहीं देखा जिसकी उन्हें उम्मीद थी, जब उन्होंने इसे देखने की उम्मीद थी, उन्होंने विश्वास खो दिया, परिणाम सुनहरा बछड़ा था। मुझे यकीन नहीं है कि मैंने कभी एक अच्छा निर्णय लिया है जब मैं घबराहट की स्थिति में था, यही एक कारण है कि परमेश्वर लगातार मुझे याद दिलाते रहते हैं हमें “डरना नहीं चाहिए” क्योंकि डर से गलत निर्णय और अविवेकपूर्ण व्यवहार होता है।

जब मूसा पहाड़ से नीचे उतर रहा था, तो उसकी मुलाकात यहोशू से हुई। यहोशू ने अंततः मूसा की जगह ले ली। जाहिर है यहोशू ने कुछ दूरी तक चढ़ाई की थी।

मूसा के साथ और फिर रुककर उसका इंतज़ार किया क्योंकि यहोशू को नहीं पता था कि शिविर में क्या हो रहा था लेकिन वह सारा शोर सुन सकता था और जानता था कि कुछ अच्छा नहीं हो रहा था, यहोशू ने कहा, “मूसा! मुझे लगता है कि युद्ध चल रहा है।” मूसा ने यहोशू से कहा, “वे बस एक विशाल ब्लॉक पार्टी कर रहे हैं!”

मूसा को आखिरकार यह देखने को मिलता है कि क्या हो रहा है और यह उसे क्रोधित कर देता है, जैसा कि उसने पहले कभी नहीं देखा था। वह उन गोलियों को ज़मीन पर फेंक देता

है, और वे सैकड़ों टुकड़ों में फट जाती हैं। उसने देखा कि पुकार पिघल गई, धूल में मिल गई, और फिर उनके पीने के पानी में छिड़क दी गई। फिर, उसने इस्राएल के लोगों को इसे पीने को दिया।

मध्य पूर्व में, जब भी कोई वाचा बनाई जाती थी, उसे तोड़ दिया जाता था और फिर उसका उल्लंघन किया जाता था, तो उस पर लिखी मिट्टी की पट्टियों को औपचारिक रूप से नीचे फेंक दिया जाता था और तोड़ दिया जाता था, ताकि यह संकेत दिया जा सके कि वाचा वास्तव में टूट गई है। इसलिए, यह क्रोध का क्षण नहीं था जिसमें मूसा ने एक पल के लिए अपना आपा खो दिया और ऐसा करते हुए कानून की पट्टियों को नीचे फेंक दिया। यह एक प्रथा थी और जब उसने ऐसा किया तो लोगों को तुरंत पता चल गया कि इसका क्या मतलब है। परमेश्वर के साथ घंटों पुरानी वाचा पहले ही टूट चुकी थी!

मूसा ने 21वें पद में हारून से पूछा कि ऐसा क्या हुआ कि वह उस मूर्ति को बनाने के लिए राजी हो गया। हारून का जवाब था कि **उन्होंने मुझे ऐसा करने के लिए कहा।** साथियों का दबाव, सामाजिक दबाव। परमेश्वरीय नेतृत्व के बजाय सभी लोगों के लिए सब कुछ बनने की इच्छा; क्या मैं परमेश्वर को या अपने दोस्तों को खुश करता हूँ? हारून ने नासमझी से चुनाव किया।

फिर मूसा ने चुनौती दी, उसने उन सभी को बुलाया जो उसके साथ खड़े हैं, और ऐसा करके परमेश्वर के साथ खड़े हैं, कि वे उसके पास आएँ। मूसा वही कर रहा है जो परमेश्वर ने हमें तब से दिखाया है जब से उसने अंधकार को प्रकाश से अलग किया था। वह एकता बनाने के लिए विभाजित करता है और अलग करता है। मैं जानता हूँ कि यह सिद्धांत कि **परमेश्वर विभाजित** करता है, उस विशिष्ट आधुनिक दिन के चर्च सिद्धांत के विपरीत है कि परमेश्वर एकजुट करता है। लेकिन "किसी भी कीमत पर एकता" सिद्धांत पवित्र शास्त्र के साथ बिल्कुल मेल नहीं खाता, मुख्यतः इसलिए क्योंकि यह बहुत सरल है। परमेश्वर एकता **प्राप्त करने के लिए** विभाजित करता है और अलग करता है। हे परमेश्वर, यहाँ निर्गमन में वह इस्राएल को विभाजित करने, इस्राएल को अपने लोगों के रूप में बाकी दुनिया से अलग करने की प्रक्रिया में है और यहाँ निर्गमन 32 में हम देखते हैं कि मूसा परमेश्वर की तरह की एकता प्राप्त करने के लिए इस्राएल के लोगों को विभाजित और अलग करता है। विभाजन, पृथक्करण और चुनाव आदर्श एकता प्राप्त करने के लिए परमेश्वर के तरीके हैं। दुख की बात है कि दुनिया और चर्च का एक बड़ा हिस्सा उस जाल में फँस गया है जो एकता को आम सहमति प्राप्त करने के लिए एक समझौते के रूप में परिभाषित

करता है। परमेश्वर की एकता का आम सहमति, सर्वसम्मति या अनुरूपता से कोई लेना-देना नहीं है। निश्चित रूप से समझौता करके नहीं। एकता का अर्थ है उसकी आत्मा के साथ एकता।

यह लेवी था, जो यहोवा के याजक और सेवक होने के लिए नियत थे, जो मूसा के चारों ओर एकत्रित हुए थे। अब, कृपया याद रखें, याजकत्व अभी तक स्थापित नहीं हुआ है। मूसा के पास आए ये लेवी अभी तक याजक घोषित नहीं किए गए थे। लेकिन, हमें यह पता लगाने के लिए बहुत मेहनत नहीं करनी है कि, विशुद्ध मानवीय दृष्टिकोण से भी, केवल लेवी ही क्यों मूसा के चारों ओर एकत्रित हुए थे, मूसा एक लेवी था और अपने वर्तमान पद का मतलब है कि लेवी का कबीले। यह जनजातीयवाद का सार है, खून पानी या किसी और चीज से अधिक गाढ़ा होता है।

प्रत्येक लेवियों ने तलवार उठाई और बछड़े की पूजा करने वाले 3000 लोगों को मार डाला। सबसे पहले, शब्दों से ऐसा लगता है कि उन्होंने न केवल गैर-लेवियों को बल्कि साथी लेवी को भी मार डाला होगा। जो मूर्ति पूजा के आगे झुक गए थे, और फिर 29वें पद में मूसा ने हत्या करने वालों को एक चौंकाने वाला बयान दिया: अपने बेटों को भी न बख्शकर तुमने खुद को परमेश्वर के लिए समर्पित कर दिया है। इसका मतलब है कि यहोवा की आज्ञा मानने और अपने ही बच्चे को उसकी आज्ञा पर मूर्तिपूजा के लिए मार डालने के बीच चुनाव करने पर तुमने अपनी इच्छाओं से ऊपर परमेश्वर की आज्ञाकारिता को चुना। यही तुम्हें अलग करता है। इस समय ये लेवियों को बाकी इस्राएलियों से अलग कर दिया गया, उन्हें पवित्र किया गया, ताकि वे परमेश्वर के पुजारी बन सकें। जल्द ही एक औपचारिक समारोह में इसकी पुष्टि की जाएगी।

वैसे: लेवियों के चरित्र में एक दिलचस्प विरोधाभास है, उत्पत्ति में, जब याकूब अपने बच्चों को मृत्युशय्या पर आशीर्वाद दे रहा था, तो उसने शिमोन और लेवी से कहा कि हिंसा उनके पीछे आएगी। लेकिन उसने उनसे कुछ और भी कहा जो अब सच हो रहा था।

पढ़ें उत्पत्ति 49:5-7

“शिमोन और लेवी भाई हैं, जो हिंसा के हथियारों से जुड़े हुए हैं। मुझे उनकी परिषद में प्रवेश न करने दें, मेरा सम्मान उनके लोगों के साथ न जोड़ा जाए क्योंकि उनके क्रोध में उन्होंने मनुष्यों को मार डाला, और अपनी इच्छा से उन्होंने मवेशियों को अपंग कर दिया। उनका क्रोध शापित हो, क्योंकि यह भयंकर है। मैं उन्हें याकूब में विभाजित करूँगा, और मैं उन्हें इस्राएल में तितर-बितर करूँगा।”

लेवी और शिमोन, शिमोन ही थे, जिन्होंने राजा के बेटे द्वारा याकूब की बेटी (उनकी बहन), दीना के साथ बलात्कार करने का बदला लेने के लिए असहाय शहर शेकेम पर हमला किया था। उन्होंने सभी नरों को मार डाला, मवेशियों को मार डाला, और जिन महिलाओं और बच्चों को छोड़ दिया गया था, उन्हें गुलाम बना लिया। इस अत्याचार के परिणामस्वरूप याकूब ने कहा कि शिमोन और लेवी का भाग्य लगातार खून और हिंसा में लिप्त रहेगा।

लेकिन याकूब ने और भी अधिक कहा जो उन 2 बेटों से संबंधित था। यहाँ “मैं उन्हें याकूब में विभाजित करूँगा” का अर्थ अब प्रकाश में आता है। यही निर्गमन 32 में लेवियों को शेष इस्राएल से विभाजित किया गया है, अर्थात्, वे याकूब में विभाजित हैं (याद रखें कि इस्राएल और याकूब समानार्थी हैं) और फिर उनके हिंसक स्वभाव का अच्छा उपयोग किया जाता है क्योंकि वे बछड़े के कई उपासकों को मार देते हैं, यहाँ तक कि अपने बच्चों को भी। याकूब के भविष्यसूचक आशीर्वाद का दूसरा भाग जिसके द्वारा लेवी को इस्राएल में बिखेर दिया जाएगा, जंगल में 40 वर्षों के अंत में होगा जब कनान की भूमि इस्राएल के गोत्रों में विभाजित हो जाती है लेकिन लेवियों को कोई भूमि नहीं मिलती है। इसके बजाय उन्हें अन्य कबिलाओं के क्षेत्रों में बिखेर दिया जाना चाहिए, उन्हें रहने के लिए 48 शहर दिए जाने चाहिए, लेकिन विभिन्न जनजातीय अधिकारियों की दया के अधीन।

मुझे लगता है कि यह भी दिलचस्प है कि लेवी, जो पुजारी बनने वाले हैं, उनमें से कई होंगे, जो प्रतिदिन खून और हत्या से निपटते हैं, लेकिन इस बार यह बलि का खून होगा, आप देखिये कि जिस हत्या को परमेश्वर न्याय कहता है वह हत्या नहीं है, बल्कि वह हत्या है जो परमेश्वर न्याय कहता है उसके बाहर है। परमेश्वर सभी जीवन बनाता है। यह कैसे समाप्त होता है यह पूरी तरह से उसे चुनना है लेवियों ने क्या किया शेकेम अन्यायपूर्ण था, यह हत्या थी, और ऐसा करने के कारण वे परमेश्वर के श्राप के अधीन थे। लेकिन जब वे मूसा के साथ खड़े रहे, परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया, और उन 3000 लोगों को मार डाला, यह उनके लिए गिना गया एक आशीर्वाद के रूप में जैसा कि पद 29 के अंत में कहा गया है। लेवियों का समग्र भाग्य परिवर्तन नहीं होगा, याकूब ने जो कहा था, उससे लेकिन यह कि कैसे प्रकट होगा इसकी प्रकृति में परिवर्तन हुआ। वे वास्तव में खून-खराबा और हत्या करेंगे, लेकिन इसके बजाय यह अन्यायपूर्ण हत्या होगी। परमेश्वर के विरुद्ध, अब वह परमेश्वर के सेवकों के रूप में होगा, जो न केवल न्यायोचित हत्या करेगा, बल्कि परमेश्वर के सेवकों के रूप में भी कार्य करेगा।

लेकिन वह हत्या जो इस्राएल के लिए परमेश्वर के सामने औचित्य और प्रायश्चित लेकर आई, परमेश्वर घोषित करता है कि क्या पवित्र और न्यायपूर्ण है, बाकी सब कुछ नहीं है और यह हमारा अधिकार नहीं है कि हम उसके चुनाव को बदल सकें।

मूर्तिपूजकों के सामूहिक वध के बाद मूसा ने यह स्पष्ट कर दिया कि इस्राएल ने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है और वाचा को तोड़ा है और अब मध्यस्थ के रूप में उसे परमेश्वर के पास जाने की आवश्यकता है ताकि यह देखा जा सके कि क्या इस भ्रष्टाचार के लिए प्रायश्चित करने का कोई तरीका है, और इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि मूसा की वाचा को फिर से स्थापित किया जाए।

मूसा पहाड़ की चोटी पर वापस चढ़ता है, और परमेश्वर से विनती करता है कि उसे जीवन की पुस्तक से हमेशा के लिए मिटा दिया जाए, यदि लोगों को उनके महान पाप के लिए क्षमा पाने के लिए ऐसा करना आवश्यक है।

जवाब में प्रभु ने यह सिद्धांत स्थापित किया कि मनुष्य अपने पापों के लिए स्वयं जिम्मेदार है, और इसलिए मूसा द्वारा इस्राएल के पापों के प्रायश्चित के रूप में अपने जीवन की बलि देने से इनकार कर दिया। पाप को दंडित किया जाना चाहिए, कोई विकल्प नहीं है। लेवियों द्वारा तलवार से मारे गए वे 3000 लोग तो बस हिमशैल के शिखर थे। बछड़े की पूजा में स्वेच्छा से भाग लेने वालों की गिनती बहुत अधिक थी और इसलिए परमेश्वर ने दंड के रूप में महामारी भेजी और बहुत से इस्राएली बीमारी से मर गए।

अगले सप्ताह अध्याय 33 में हम मूसा को पहाड़ पर वापस जाते देखेंगे।